CC BY

Evolving Perspectives: The Changing Landscape Of Literature And Its Modern Interpretations

साहित्य का बदलता परिदृश्य और आधुनिक बोध

– डॉ. मीना शर्मा

प्रत्येक रचना एक प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया हमें अपने समय की प्रबल भावनाओं के रूबरू खड़ा कर देती है, जो किसी को क्षमा नहीं करती। यह प्रश्न उन तमाम लोगों के लिए, जो कला के बगैर और जो अभिव्यक्ति कला करती है उसके बगैर जिन्दा नहीं रह सकते सिर्फ यह जानने का है कि कैसे इतनी सारी विचारधराओं की प्रतिबंध शक्ति की मौजूदगी में सृजन की आश्चर्यजनक आज़ादी मुमकिन है।

जब हम साहित्य और संस्कृति के बदलते परिवेश और परिप्रेक्ष्य में सोच में सोच एवं मूल्यों से उत्पÂ समस्याओं की चुनौती को स्वीकार करने के बजाय पिफर वही पुराने समाधन प्रस्तुत करते हैं तो इसका अभिप्राय यह है कि हम अपनी ऊर्जा एवं ऊष्मा खो चुके हैं। यह स्थिति उत्तर–आधुनिकतावाद के विनाश विमर्श को सृदृढ़ करती है जिसमें प्रत्येक वस्तु एवं विचार यहां तक कि भविष्य के अवसान की भी घोषणा हो चुकी है। जब रोमांटिकवादी कवियों ने अपने स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति में लिखना आरम्भ किया तो आधुनिकता के अनुयायियों में यह प्रवृत्तिर उभर कर सामने आई और साहित्यिक आधुनिकतावाद जो सृजन और समालोचना था महत्वपूर्ण विमर्श बन गया। इस सन्दर्भ में इरविंग होऊ ने स्पष्ट लिखा है– पगत एक सौ वर्षों में हमारे पास एक विशेष प्रकार का साहित्य रहा है। हम इसे पहचान देते हैं। जबकि समकालीनता का संबंधे वर्तमान समय से है, आधुनिकता का संवेदन तथा स्टाइल से है। जबकि समकालीन एक निर्पख संदर्भ का शब्द है। आधुनिकता सकारात्मक संदभ र और निर्माण का शब्द है। आधुनिकता अब समाप्ति के निकट नज़र आती है। यद्यपि हम यह निश्चित तौर पर की प्रकृति देखते हुए आधुनिकता युग कभी खत्म नहीं हो सकता। ;लिटरेरी मॉडर्निज्म 1967द्ध वहीं मार्क्सवाद ने व्यक्ति को भौतिक ऐतिहासिक अस्त्विवाद का निष्क्रिय अंग बना दिया वहाँ प्रफायड ने उसे शैशवकाल के अनुभवों, अवचेतन तथा यौन प्रवृत्ति का जन्मजात दास बना दिया। एक की दुनिया बाहर की थी। दूसरे के भीतर की। लेकिन दोनों ही ने मनुष्य की इच्छाशक्ति के दायरे को सीमित कर दिया। हालांकि अस्तित्ववाद ने यह कहकर कि

फ्मैन इज़ कॉमिटिड टू बी प्रफीय् नियतिवाद का भ्रम ज़रूर के चयन और कर्म की स्वतंत्राता की एक बार पिफर केन्द्र में ला खडा कर दिया है। अस्तित्ववाद अस्तित्व के चयन की प्रक्रिया तक पहुंचता है और पिफर चमन से स्वतंत्राता के विचार एवं कर्म तक, प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रा होने और रहने पर विवश है, यही उसके अस्तित्व और अनुभव का स्त्राोत है। क्योंकि व्यक्ति अपने मूल्यों और मंजिल का चयन तथा निर्धरण स्वयं करता है और इसका जो भी अंजाम हो उसकी सज़ा भुगतने के लिए उसे तैयार रहना चाहिए।

अस्तित्ववाद की आलोचना हुई उसे निरर्थकता और निस्सारत्पं का दर्शन कहा गया लेकिन वह साहित्य का अहम कन्सर्न बन गया। साहित्य में मनुष्य की विभिन्न विषमताओं, विसंगतियों, विवशताओं एवं सीमाओं के साथ दार्शनिक एवं कलात्मक दृष्टि से उसमें प्रस्तुत किया गया। सत्यता और यर्थाथवाद का अच्छी तरह उकेरा गया। उसमें जो मनुष्य था वो थका हुआ, अकेला निराश था परन्तु मौजूद था। उसका अस्तित्व था।

वही दूसरी ओर उत्तर आधुनिकतावाद ने उसके वैचारिक पक्ष को, निशाना बनाया और पिफर उसके अन्त की घोषणा कर दी। आधुनिकतावाद ने साहित्य को एक अलग सोच का दायरा दिया। मनुष्य के संशयों और मूल्यों के संकट, उसकी अन्तव्यथा को सृजनात्मक प्रक्रिया से अलग नहीं होने दिया। इस प्रकार उत्तर आधुनिकतावाद साहित्य–समीक्षा के स्थान पर विमर्श–विश्लेषण ;डिस्कोर्स अनालिस्टद्ध को विठा देता है। यही कारण है कि अपने तमाम दावों के बावजूद उसकी साहित्यिक कृत्यों की समीक्षा सामाजिक सरोकारों तथा राजनीतिक एजेंडा का परिपत्रा या घोषणापत्रा बनकर रह जाती है। इस प्रकार साहित्यिक विमर्श अंतर्विषमीय हो गया।

देसीवाद ही वास्तव में उत्तर आधुनिकतावाद का संशोध्ति संस्करण है– जिसे ग्लोबल स्टडीज कहा जाता है। पहली दुनिया में जो सांस्कृतक विविध्ता का विस्पफोट दिखाई देता है वह वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भूमंडलीय बाज़ार व्यवस्था में पूर्वाधुनिक तथा आधुनिक संस्कृतियों का एकीकरण है जिसमें रूचियों के प्रभुत्वशील रूपों का कुछ शासन तंत्राों में निरन्तर बढती हुई एकाग्रता है। बहुल संस्कृतिवाद के साथ पहली दुनिया की मंडियाँ, शैलियाँ और रूचियां तीसरी दुनिया में पहले से कहीं अध्कि व्यापक और अध्कि संपूर्ण रूप से अंतर्निहित हो रही हैं। यहां तक कि पहली दुनिया की श्रेष्ठता और इसके पैराडाइम पर अब किसी बहस की जरूरत नहीं समझी जाती। बल्कि उपभोग एवं पैफशन अब स्वयंसि(है। ;क्लाडिया लोमनिट्यं, डिकेडंस इन टाइम्स ऑपफ ग्लोबलाइज़ेशनद्ध घूम–पिफरकर मामला अपने मूल में पिफर पश्चिम की वैश्विकता पर पहुँच गया और ग्लोबल स्टडीज और डिस्कोस र का दौर शुरू हो गया जो इक्कीसवीं सदी के बुि(जीवियां में संवाद का स्त्राोत बना हुआ है। विकेन्द्रीयता, जातीय–विभेदता, सांस्कृतिक बहुता तथा विविध्ता और अस्मिता के शोर के बावजूद अभिरुचियों और प्रतिमानों का एक नया ग्लोबल मॉडल विकसित हो रहा है। मल्टी तथा ट्रांस नेशनल पूंजी विनिवेश, सूचना टेक्नोलॉजी, इन्टरनेट, सरहदों का सरकना या अतिक्रमण ज़मीनी और जहनी मोबिलिटी, राष्ट्र–राज्य का सिमटता प्रभुत्व सीमाहीन संसार और ऐसी कई प्रक्रियाएं हैं जो विश्वदृष्टि की ही नहीं बल्कि विश्वदर्शन को भी प्रभावित कर रही हैं। जो हमारे सृजन और ध्रातल दोनों को बदल रही हैं परन्तु हमें इससे डरने की आवश्यकता नहीं है बल्कि जरूरत है तो भविष्यबोध और विज़न की।

निष्कर्षतः जहाँ मनुष्य ध्रती से ऊपर उठकर चन्द्रमा पर बस्ती बसाने के ब्लूप्रिंट तैयार कर रहा है। वहां उसे अंतर्शून्य से भी गुज़रना पड़ रहा है। जिसमें मनुष्य के अस्तित्व की तनहाई और निस्सारता में कला और कविता अंतरंग ही नया रंग दिखा सकती है। नयी सदी में सृजन और चिंतन तथा उसकी कल्पना, जिज्ञासा को निरंतरता प्रदान कर सकती है। जहां यथार्थबोध साथ छाड़ देता है वहां कल्पनाशक्ति दामन थाम लेती है। क्योंकि सृजन का कोई एक प्रेरणास्त्राोत नहीं होता अर्थात् उसके रूप आकार, मंजिल, पैटर्न अनेक होते हैं। उसे तो दीवारों पर भी दस्तक देनी पड़ती है। स्पष्ट है कि साहित्य किसी प(ति का पालन नहीं बल्कि सजन का जोखिम होता है। आज का साहित्य जिसमें आम आदमी की उपस्थिति सापफ दिखाई देती है। उसमें सृजन की असीम संभावनाएं हैं जो वर्तमान समय में कल्पनातीत लगती है लेकिन आने वाले समय में वे हमारे अनुभूति हमारी संवेदना हमारी चेतना और हमारी अंतरंग सच्चाई बन चुकी होगी।